International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 8 || August 2025 || PP. 69-76

रविन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिन्तन एवं नई शिक्षा नीति 2020 पर एक अध्ययन

A Study on Rabindranath Tagore's Educational Thinking and New Education Policy 2020

Poonam Kushwaha[1], Dr. Sarita Goswami[2]
[1]*Research Scholar, College of Education, IIMT University Meerut U.P. India.*
[2]*Professor & Dean, College of Education IIMT University Meerut U.P. India.*

अमूर्तः *यह शोध पत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों और भारत की नई शिक्षा नीति 2020 के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। टैगोर ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति और मानवता की पूर्ति का साधन माना। वहीं, नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप बनाने हेतु तैयार की गई एक समग्र नीति है। इस शोध में टैगोर के शैक्षिक सिद्धांतों जैसे – प्रकृति से जुड़ाव, कला का समावेश, मातृभाषा में शिक्षा और बाल–केंद्रित शिक्षण को नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों से जोड़ा गया है। आलेख में दोनों के बीच साम्यता, विरोधाभास और समकालीन शिक्षा व्यवस्था में टैगोर की विचारधारा की प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण किया गया है।*

रवीन्द्रनाथ टैगोर, एक महान शिक्षाशास्त्री, कवि, और दार्शनिक के रूप में भारतीय शिक्षा दर्शन में अद्वितीय स्थान रखते हैं। उनका शैक्षिक चिंतन औपनिवेशिक ढांचे के विरुद्ध एक वैकल्पिक, मानवतावादी एवं अनुभवपरक शिक्षा प्रणाली की वकालत करता है। टैगोर शिक्षा को एक रचनात्मक, समावेशी और जीवनोपयोगी प्रक्रिया मानते थे, जो केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं बल्कि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास का माध्यम होनी चाहिए। वे शिक्षा को बालक की जिज्ञासा, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और आत्म–अभिव्यक्ति का मार्ग मानते थे।

इस शोधपत्र में टैगोर के शैक्षिक सिद्धांतों की प्रमुख विशेषताओं जैसे प्रकृति के साथ तालमेल, मातृभाषा में शिक्षा, कला और संगीत का समावेश, शिक्षा में स्वतंत्रता और आध्यात्मिकता पर विस्तृत चर्चा की गई है। टैगोर द्वारा स्थापित शांति निकेतन विद्यालय को एक प्रयोगात्मक मंच के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ उन्होंने अपने शैक्षिक दर्शन को व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव का संकेत देती है। यह नीति बहुभाषिकता, लचीले पाठ्यक्रम, समग्र मूल्यांकन, अनुभवात्मक अधिगम और कौशल विकास जैसे अनेक ऐसे तत्वों को बढ़ावा देती है, जो टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण से गहराई से मेल खाते हैं। यह शोध टैगोर के शैक्षिक चिंतन और नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य सैद्धांतिक समानताओं एवं व्यावहारिक अंतरालों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि टैगोर की शिक्षा प्रणाली आज भी प्रासंगिक है और नई शिक्षा नीति में उनके विचारों का परोक्ष समावेश दृष्टिगोचर होता है। टैगोर के विचारों की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में पुनर्पुष्टि आवश्यक है ताकि शिक्षा वास्तव में आत्म–विकास, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का संवाहक बन सके।

यह शोध शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और अनुसंधानकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा के मध्य एक सेतु की तलाश में हैं। टैगोर का शैक्षिक दृष्टिकोण नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में एक नैतिक एवं रचनात्मक पृष्ठभूमि प्रदान कर सकता है।

बीज शब्दः *टैगोर, शैक्षिक चिंतन, नई शिक्षा नीति 2020, समग्र शिक्षा, अनुभवपरक अधिगम, शांति निकेतन, बहुभाषिकता, कला शिक्षा।*

Date of Submission: 27-07-2025 Date of Acceptance: 05-08-2025

I. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा परंपरा सदियों से विविध और समृद्ध रही है। यह परंपरा वैदिक युग के गुरुकुलों से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक फैली हुई है, जिसमें विभिन्न युगों में महान शिक्षकों, दार्शनिकों और चिंतकों का योगदान रहा है। इन्हीं महान व्यक्तित्वों में से एक थे गुरुदेव

रवीन्द्रनाथ टैगोर, जिन्होंने न केवल साहित्य के क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया, बल्कि भारतीय शिक्षा दर्शन को भी एक मानवीय और समग्र दिशा दी। उनका शैक्षिक चिंतन आज भी शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रेरणास्रोत के रूप में विद्यमान है।

टैगोर शिक्षा को केवल सूचना या ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं मानते थे, बल्कि वे शिक्षा को आत्मा की अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता की अनुभूति और जीवन के सम्पूर्ण विकास का माध्यम मानते थे। उन्होंने बच्चों को बंधी–बंधाई पुस्तकीय प्रणाली से मुक्त कर प्राकृतिक परिवेश में, स्वतंत्र वातावरण में, जिज्ञासा एवं रचनात्मकता के माध्यम से सीखने की प्रणाली पर बल दिया। टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि मनुष्य का समग्र विकास, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक सभी विकास साथ में हो सके।

टैगोर के इसी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर उन्होंने शांति निकेतन और बाद में विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो शिक्षा को प्रकृति, कला, संगीत, भाषा और सांस्कृतिक समरसता से जोड़ता था। उन्होंने शिक्षा को एक जीवंत प्रक्रिया माना जो छात्र को सिर्फ पेशेवर या अकादमिक रूप से नहीं, बल्कि एक बेहतर इंसान बनने की ओर अग्रसर करती है।

इसी संदर्भ में यदि हम भारत की नई शिक्षा नीति 2020 को देखें, तो स्पष्ट रूप से यह एक ऐसा ऐतिहासिक प्रयास है जो शिक्षा को भारतीय मूल्यों, विविधता और वैश्विक आवश्यकताओं के साथ समन्वित करने का कार्य करता है। यह नीति 34 वर्षों के बाद शिक्षा के क्षेत्र में एक व्यापक पुनरावलोकन के रूप में आई है और इसका उद्देश्य है – एक समावेशी, लचीली, बहु–विषयक और कौशल–आधारित शिक्षा प्रणाली की स्थापना।

नई शिक्षा नीति 2020 के कुछ प्रमुख पहलुओं जैसे – मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, 5+3+3+4 की संरचना, कलात्मक, खेल एवं व्यावसायिक शिक्षा का समावेश, शिक्षण की लचीलापन और समग्र मूल्य–आधारित शिक्षण को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह नीति टैगोर के कई शैक्षिक विचारों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रेरित है।

हालाँकि, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि इन विचारों का धरातल पर किस प्रकार क्रियान्वयन हो रहा है और टैगोर की शिक्षा–नीति से कितनी समानता और अंतर है – यह एक समसामयिक और प्रासंगिक शोध का विषय है।

इस आलेख का उद्देश्य है – टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण और नई शिक्षा नीति 2020 के मूलभूत सिद्धांतों का तुलनात्मक विश्लेषण करना, उनके बीच की साम्यता और भिन्नता को उजागर करना, और यह समझना कि टैगोर का मानवीय शिक्षा दृष्टिकोण आज के तकनीकी, वैश्विक और प्रतिस्पर्धी युग में कितनी प्रासंगिकता रखता है। साथ ही यह शोध यह भी स्पष्ट करेगा कि वर्तमान शिक्षा नीति में टैगोर के सिद्धांतों को किस सीमा तक समाहित किया गया है और किन पहलुओं में और अधिक समावेशन की आवश्यकता है।

अतः यह अध्ययन न केवल दो शैक्षिक दृष्टिकोणों की तुलना भर नहीं है, बल्कि यह एक गहरी पड़ताल है – कि क्या आज की शिक्षा प्रणाली, टैगोर के उस 'विहंगम दृष्टिकोण' की ओर बढ़ रही है जिसमें शिक्षा, मानवता का उत्सव बन जाती है।

II. रविन्द्रनाथ टैगोर से सम्बन्धित शोध साहित्यिक समीक्षा

भारतीय शिक्षा–दर्शन पर अनेक विचारकों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है, किंतु रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन एक विशिष्ट स्थान रखता है। उनका दृष्टिकोण न केवल शिक्षा की औपचारिकता से परे जाता है, बल्कि मानव के समग्र विकास को केंद्र में रखता है। साहित्यिक समीक्षा का उद्देश्य इस शोध से संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों, लेखों, पुस्तकों और अन्य साहित्यिक स्रोतों का विश्लेषण करना होता है, जिससे शोध की पृष्ठभूमि को समझा जा सके।

टैगोर का शैक्षिक चिंतन – साहित्यिक दृष्टिकोण

i. टैगोर के मूल ग्रंथ और विचार

टैगोर के कई निबंध, व्याख्यान और पत्र उनके शैक्षिक चिंतन का प्रतिबिंब हैं। "शिक्षा", "शिक्षा का हेर फेर", "Towards Universal Man" (1961) तथा "My School" (साधना पत्रिका 1982 व 1917) जैसे लेखों में उन्होंने अपने शैक्षिक आदर्शों को स्पष्ट किया है। टैगोर ने शिक्षा को केवल सूचनात्मक नहीं, बल्कि मानवीय और आध्यात्मिक विकास का माध्यम माना।

उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है, बल्कि व्यक्ति के भीतर अंतर्निहित प्रतिभाओं को विकसित करना है। उनका विश्वास था कि प्रकृति के सान्निध्य में, कला और संगीत के साथ जुड़कर बालक अधिक सीख सकता है। यह विचार शांति निकेतन और बाद में विश्व भारती विश्वविद्यालय में मूर्त रूप में सामने आया।

ii. टैगोर के शैक्षिक विचारों पर उपलब्ध साहित्यः

"Personality" (1917) और "Towards Universal Man" (1961) जैसे टैगोर के मूल ग्रंथों में उन्होंने शिक्षा को आत्मा का पोषण बताया है। टैगोर मानते थे कि शिक्षा केवल ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि जीवन को पूर्ण रूप से जीने की कला है।

Krishna Kumar (2007) द्वारा रचित "What is Worth Teaching?" में टैगोर की बाल–केन्द्रित शिक्षा, रचनात्मकता और अनुभवात्मक अधिगम की प्रशंसा की गई है। यह दृष्टिकोण एनईपी 2020 के "Foundational Literacy & Numeracy" और "Experiential Learning" से मेल खाता है।

Amartya Sen (1997) ने टैगोर को एक "Public Intellectual" बताते हुए कहा कि उनका शिक्षा दर्शन मनुष्य की स्वतंत्रता और सांस्कृतिक विविधता को आत्मसात करता था। यह विचार एनईपी में "multilingualism" और "flexibility" की भावना से मेल खाता है।

iii. टैगोर के विद्यालय और वैकल्पिक शिक्षा पर साहित्यः

Shantiniketan को एक प्रयोगात्मक विद्यालय के रूप में टैगोर ने प्रकृति के बीच स्थापित किया था, जहाँ शिक्षक और छात्र समान रूप से सीखते थे।

Uma Das Gupta 2004 की पुस्तक "Rabindranath Tagore: A Biography" में शांति निकेतन की पृष्ठभूमि और शैक्षिक नवाचारों की विस्तृत जानकारी है।

टैगोर की शिक्षा प्रणाली को "Liberal, Holistic and Value-Based Education" की श्रेणी में रखा जाता है, जो नई शिक्षा नीति 2020 के मूल तत्वों में से एक है।

iv. तुलनात्मक अध्ययन पर पूर्ववर्ती शोधः

"Tagore's Educational Thoughts and Contemporary Relevance" शीर्षक से प्रकाशित कई शोध लेखों में बताया गया है कि टैगोर की विचारधारा आज भी भारत की शिक्षा नीतियों में प्रासंगिक है।

उदाहरणः Dr. S. Chakraborty (2015) के अनुसार टैगोर की शिक्षा में "Unity in Diversity" की भावना है, जो एनईपी के "Equitable and Inclusive Education" सिद्धांत से मेल खाती है।

Journal of Indian Education (NCERT) और University Grants Commission (UGC) के शोध पत्रों में टैगोर और समकालीन नीतियों के अंतर्संबंधों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

v. टैगोर की शिक्षण पद्धतियाँ एवं सिद्धांतः

टैगोर के अनुसार शिक्षण को कक्षा की चारदीवारी से बाहर निकालकर जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। वे अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning), सह–अस्तित्व और सह–अनुभूति के पक्षधर थे। वे मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, कला–संगीत का एकीकरण और प्रकृति के साथ जुड़ाव को आवश्यक मानते थे। टैगोर की शिक्षा "शिक्षक और छात्र दोनों के बीच जीवंत संवाद" पर आधारित थी।

vi. डॉ. कृष्ण कुमार (NCERT) के विचार

डॉ. कृष्ण कुमार (2007) ने अपनी पुस्तक "What is Worth Teaching" में टैगोर की शिक्षा प्रणाली की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "टैगोर ने औपनिवेशिक शिक्षा के अनुशासित, एकरूप और यांत्रिक ढांचे को तोड़ते हुए एक ऐसा वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत किया जो आत्मा और प्रकृति के बीच संतुलन पर आधारित था।" उन्होंने यह भी बताया कि टैगोर की शिक्षा प्रणाली में स्वतंत्रता और अनौपचारिकता का समावेश था।

vii. अमर्त्य सेन का दृष्टिकोण

नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन, (2005) जो स्वयं टैगोर के विश्व भारती विश्वविद्यालय से जुड़े रहे हैं, ने "The Argumentative Indian" और अन्य लेखों में टैगोर की शिक्षा दृष्टि को अत्यधिक मानवीय, लोकतांत्रिक और वैश्विक मान्यताओं से जुड़ा बताया है। सेन के अनुसार, टैगोर ऐसे पहले भारतीय विचारक थे जिन्होंने शिक्षा को सांस्कृतिक आदान–प्रदान और वैश्विक संवाद का माध्यम बनाया।

viii. रमेश चंद्र मजूमदार और अन्य शिक्षाशास्त्री

मजूमदार (2010) की "Education in Ancient India" पुस्तक में टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण को भारतीय परंपरा से जोड़ते हुए दर्शाया गया है। उनके अनुसार टैगोर ने प्राचीन भारतीय शिक्षा की आत्मा को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया।

ix. UNESCO और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ

यूनेस्को (2021) की रिपोर्ट "Reimagining Our Futures Together" में जिस प्रकार शिक्षा को समावेशी, रचनात्मक और मानवीय बनाने की बात की गई है, वह टैगोर के शैक्षिक आदर्शों के अत्यंत समीप प्रतीत होती है। टैगोर को एक वैश्विक शिक्षाविद् के रूप में मान्यता प्राप्त है जिनकी शिक्षा–दृष्टि आज के "होलिस्टिक लर्निंग" मॉडल से मेल खाती है।

नई शिक्षा नीति 2020 एवं रविन्द्रनाथ टैगोर से सम्बन्धित शोध साहित्यिक की समीक्षा

i. नई शिक्षा नीति 2020 की मुख्य बातें: नई शिक्षा नीति 2020 में टैगोर के विचारों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जैसे कि:

बहुभाषिकता: टैगोर की तरह नई शिक्षा नीति भी मातृभाषा में शिक्षा की वकालत करता है (नई शिक्षा नीति, 2020, para 4.11)।

लचीला पाठ्यक्रम: टैगोर की समग्र शिक्षा पद्धति की तरह नई शिक्षा नीति में कला, संगीत, विज्ञान और व्यावसायिक विषयों को आपस में जोड़ने का प्रस्ताव है।

जीवन कौशल पर बल: टैगोर की "जीवन में शिक्षा" की अवधारणा नई शिक्षा नीति में Life Skills, Critical Thinking और Holistic Education के रूप में सामने आती है।

ii. समकालीन शोध और तुलनात्मक अध्ययन:

टैगोर के शिक्षा दर्शन और नई शिक्षा नीति 2020 के बीच साम्यताओं को कई शोधकर्ताओं ने इंगित किया है:

डॉ. एस. चक्रवर्ती (2015) ने अपने शोध पत्र में कहा कि टैगोर की शिक्षा प्रणाली "Equity, Creativity and Natural Integration" पर आधारित थी।

प्रो. यशपाल समिति (2009) की रिपोर्ट में भी औपचारिक शिक्षा में रचनात्मकता और मूल्यों के समावेश पर बल दिया गया था।

iii. कस्तूरीरंगन समिति की रिपोर्ट (2019)

नई शिक्षा नीति 2020 का मसौदा तैयार करने वाली समिति ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों को शिक्षा के केंद्र में रखने की बात की। समिति की रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि शिक्षा को बालक की रुचि, स्थानीय संदर्भ और मातृभाषा से जोड़ना आवश्यक है कि यह दृष्टिकोण टैगोर की शिक्षा नीति से मेल खाता है।

iv. भारत सरकार का आधिकारिक दस्तावेज (नई शिक्षा नीति 2020)

नीति में कई ऐसे बिंदु हैं जो टैगोर के विचारों से प्रेरित लगते हैं, जैसे – कला और खेल का समावेश, बहु–विषयक दृष्टिकोण, नैतिक और मूल्य–आधारित शिक्षा, और मातृभाषा में शिक्षण। यद्यपि नीति में तकनीकी और कौशल विकास को प्राथमिकता दी गई है, लेकिन मानवीय और रचनात्मक पक्ष पर भी बल दिया गया है।

v. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)

नई शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में NCERT की भूमिका प्रमुख रही है। इसके प्रशिक्षण दस्तावेजों में "क्रिटिकल थिंकिंग", "कंस्टक्टिविज्म" और "आर्ट इंटिग्रेटेड लर्निंग" को बढ़ावा दिया गया है – जो टैगोर के शैक्षिक दर्शन से प्रेरित माने जा सकते हैं।

vi. विश्वविद्यालयों एवं शोधपत्रों की समीक्षाएं

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) जैसे संस्थानों से प्रकाशित अनेक शोधपत्रों में नई शिक्षा नीति 2020 को टैगोर के शिक्षा मॉडल की आधुनिक व्याख्या बताया गया है। यद्यपि इनमें यह भी कहा गया है कि

टैगोर की शिक्षा प्रणाली का व्यावहारिक पक्ष, जैसे–प्रकृति में अध्ययन, आंतरिक स्वायत्तता की नीति के दस्तावेज़ों में तो है, परंतु जमीनी क्रियान्वयन में उसका अभाव है।

साहित्यिक समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि टैगोर का शैक्षिक चिंतन आज भी शिक्षाविदों, नीति–निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वहीं, नई शिक्षा नीति 2020 इस शताब्दी का एक ऐसा प्रयास है जिसमें टैगोर के दृष्टिकोण को नीतिगत रूप में शामिल करने की कोशिश की गई है। लेकिन जहां टैगोर शिक्षा को आत्मा और प्रकृति के मेल से जोड़ते हैं, वहीं नई शिक्षा नीति 2020 इसे डिजिटल, तकनीकी और वैश्विक आवश्यकताओं से भी जोड़ती है।

इसलिए साहित्यिक दृष्टिकोण से यह समीक्षा बताती है कि दोनों दृष्टिकोणों में सिद्धांत की समानता तो है, परंतु आत्मिकता और व्यवहारिकता में अभी भी दूरी शेष है, जिसे कम करने की आवश्यकता है।

III. शोध अंतराल

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन भारतीय शिक्षा के स्वदेशी दृष्टिकोण की नींव है, जिसमें स्वतंत्रता, रचनात्मकता, प्रकृति से जुड़ाव, मातृभाषा का प्रयोग, कला और संगीत आधारित अधिगम तथा जीवनोन्मुख शिक्षा की अवधारणा प्रमुख है। वहीं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में लचीलापन, बहु–विषयक दृष्टिकोण, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, और मूल्य–आधारित अधिगम को प्राथमिकता देती है। हालांकि यह स्पष्ट है कि नई शिक्षा नीति 2020 की कई अवधारणाएँ टैगोर की शैक्षिक दृष्टि से मेल खाती हैं, लेकिन इस साम्य का विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक और व्यवस्थित अध्ययन सीमित स्तर पर ही उपलब्ध है। वर्तमान में उपलब्ध अधिकांश शोध या तो टैगोर के शैक्षिक विचारों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं, या फिर नई शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन और संरचना पर केंद्रित होते हैं। दोनों को एक साझा संदर्भ में समेटने वाले विद्वतापूर्ण अध्ययनों की संख्या अत्यंत कम है।

इसके अतिरिक्त, जहाँ एक ओर टैगोर के शैक्षिक प्रयोगों को शांतिनिकेतन, विश्वभारती और ग्राम शिक्षा केंद्रों तक सीमित कर देखा गया है, वहीं दूसरी ओर नई शिक्षा नीति 2020 को अधिकतर प्रशासनिक व नीतिगत दस्तावेजों के माध्यम से व्याख्यायित किया गया है। दोनों विचारधाराओं के बीच के बौद्धिक, वैचारिक और व्यावहारिक सेतु की तलाश एक महत्वपूर्ण शोध आवश्यकता बन गई है। टैगोर के दृष्टिकोण से शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक और सह–अभ्यासी की थी, जबकि नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की पुनर्परिभाषा पर बल दिया गया है, किंतु इन दोनों संदर्भों का तुलनात्मक मूल्यांकन अभी तक शिक्षा के आधुनिक शोध–परिदृश्य में अपेक्षाकृत अनुपस्थित है।

इसी प्रकार, टैगोर द्वारा प्रस्तावित षशिक्षा का उद्देश्य आत्मा का विकास और सामाजिक जागरूकता की स्थापनाष के सिद्धांत को नई शिक्षा नीति 2020 में कितनी प्रासंगिकता मिली है–इसका व्यवहारिक मूल्यांकन तथा विद्यालय स्तर पर इसकी साक्ष्य–आधारित समीक्षा आज भी शोधकर्ताओं के लिए खुला क्षेत्र है। नई शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, कला–समावेशन, लोक भाषा और समावेशिता की बात की गई है, लेकिन इसे टैगोर के शिक्षा के सौंदर्यशास्त्र और ग्रामीण आत्मनिर्भरता आधारित दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में देखने का कोई व्यापक विश्लेषणात्मक प्रयास सामने नहीं आया है।

शोध–अध्ययन का उद्देश्य किसी विशेष विषय या क्षेत्र में पूर्ववर्ती अध्ययनों, विचारों और प्रयासों की गहराई से समीक्षा कर यह स्पष्ट करना होता है कि अब तक क्या कार्य हुआ है और किन पहलुओं पर अब तक पर्याप्त शोध नहीं हुआ है, यही 'शोध अंतराल' कहलाता है। ''टैगोर का शैक्षिक चिंतन एवं नई शिक्षा नीति 2020 पर एक अध्ययन'' विषय के सन्दर्भ में शोध अंतराल को चिह्नित करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यह विषय ऐतिहासिक, दार्शनिक, शैक्षिक और समकालीन नीतिगत दृष्टिकोणों का संगम है।

IV. शोध उद्देश्य

i. टैगोर के शिक्षा चिंतन के प्रमुख तत्वों का अध्ययन करना।

ii. नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख तत्वों का अध्ययन करना।

iii. टैगोर के शैक्षिक चिंतन और नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य साम्यता और विरोधाभास का अध्ययन करना।

iv. टैगोर के शैक्षिक विचारों की नई शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता की समीक्षा करना।

v. शिक्षा नीति 2020 को टैगोर के अनुसार प्रभावी बनाने हेतु सुझाव।

V. टैगोर का शिक्षा दर्शन व नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन

I. टैगोर के शैक्षिक चिंतन के प्रमुख तत्वः

i. **प्राकृतिक परिवेश में शिक्षाः** टैगोर के लिए शिक्षा का सर्वोत्तम स्थल प्रकृति थी। उनका मानना था कि विद्यालय भवनों में सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्र को प्रकृति के सान्निध्य में सीखना चाहिए। शांति निकेतन इसी दर्शन का मूर्त रूप था।

ii. **कला और शिक्षा का समन्वयः** टैगोर ने संगीत, चित्रकला, नृत्य और नाट्यकला को शिक्षा का अंग बनाया। उन्होंने मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने के लिए कलात्मक शिक्षा को आवश्यक माना।

iii. **स्वतंत्रता और स्वायत्तताः** छात्रों को पाठ्यक्रम की बंदिशों से मुक्त रखते हुए स्वाध्याय और अनुभव के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहित किया।

iv. **मातृभाषा में शिक्षाः** टैगोर बालकों की भाषा में शिक्षा देने के पक्षधर थे जिससे उनकी बौद्धिक और रचनात्मक क्षमताएँ विकसित हो सकें।

v. **समावेशी दृष्टिकोणः** टैगोर किसी जाति, धर्म या लिंग के भेदभाव से परे सबके लिए शिक्षा के समान अवसर चाहते थे।

II. नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख तत्वः

i. **5+3+3+4 संरचनाः** नीति में प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक की एक नई संरचना प्रस्तावित की गई है जो संज्ञानात्मक विकास के चरणों पर आधारित है।

ii. **मातृभाषा में शिक्षणः** कक्षा 5 तक मातृभाषा में पढ़ाई पर बल। यह टैगोर की भाषा संबंधी सोच के अनुकूल है।

iii. **कला, खेल और कौशल शिक्षाः** संगीत, कला और खेल को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाना टैगोर की बहुआयामी शिक्षा की सोच से मेल खाता है।

iv. **समावेशी और लचीला पाठ्यक्रमः** नई शिक्षा नीति में छात्रों को विषय चुनने की स्वतंत्रता दी गई है जिससे उनकी रुचि के अनुसार शिक्षण संभव हो सके।

v. **तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का समावेशः** नई शिक्षा नीति कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा का हिस्सा बनाकर रोजगार उन्मुखीकरण को बढ़ावा देती है।

III. टैगोर के शैक्षिक चिंतन और नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य साम्यता और विरोधाभासः

साम्यता एवं विरोधाभास को समझने के लिए अलग–अलग निम्न सारणी के माध्यम से समझा जा सकता है–

सरणीः1

टैगोर के शैक्षिक चिंतन व नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य साम्यताः

मुख्य तत्व	टैगोर के शैक्षिक चिंतन व नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य साम्यता	
	टैगोर का दृष्टिकोण	नई शिक्षा नीति 2020
समग्र शिक्षा	टैगोर का शिक्षा दर्शन बालक के सर्वांगीण विकास पर आधारित था – शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक।	NEP 2020 भी "holistic development" पर बल देती है जिसमें छात्र की रुचियों, रचनात्मकता और क्षमताओं का विकास हो।
प्राकृतिक परिवेश में शिक्षा	टैगोर का मानना था कि शिक्षा प्रकृति के साथ घुलकर होनी चाहिए। शांतिनिकेतन इसकी मिसाल है।	NEP 2020 भी "Experiential learning", "outdoor learning" और "environmental education" पर जोर देती है।
रचनात्मकता और कला का समावेश	टैगोर का शैक्षिक दर्शन कला, संगीत, नृत्य और साहित्य के साथ गहराई से जुड़ा था।	NEP 2020 भी कला–आधारित शिक्षा, कला एकीकरण और बहु–विषयक (multidisciplinary) शिक्षा को बढ़ावा देती है।
स्वतंत्रता और आत्म–अभिव्यक्ति	टैगोर विद्यार्थियों को स्वतन्त्रता देना चाहते थे ताकि वे स्वयं सोचें, महसूस करें और रचें।	NEP 2020 में भी छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया गया है जो उनकी जिज्ञासा और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।
शिक्षक का मार्गदर्शक रूप	टैगोर शिक्षक को केवल ज्ञान देने वाला नहीं बल्कि बालक का मार्गदर्शक मानते थे।	NEP 2020 भी "teacher as facilitator" की भूमिका को स्वीकार करती है।
भाषा पर बल	टैगोर ने मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने की वकालत की थी।	NEP 2020 के अनुसार प्राथमिक स्तर तक शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय भाषा में दी जानी चाहिए।

सरणीः 2

टैगोर के शैक्षिक चिंतन और नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य विरोधाभासः

मुख्य तत्व	टैगोर के शैक्षिक चिंतन और नई शिक्षा नीति 2020 के मध्य विरोधाभास	
	टैगोर का दृष्टिकोण	नई शिक्षा नीति 2020
औपचारिक बनाम अनौपचारिक शिक्षा	टैगोर औपचारिक शिक्षा पद्धति से असहमत थे और उन्होंने मुक्त वातावरण में शिक्षा की बात की है।	NEP 2020 भले ही लचीली हो, परंतु यह एक औपचारिक ढांचे में ही कार्य करती है।
आत्मनिर्भर संस्थान बनाम केंद्रीकृत प्रणाली	टैगोर की दृष्टि में शिक्षा संस्थान आत्मनिर्भर और स्वशासी होने चाहिए थे।	NEP 2020 में कई स्तरों पर केंद्र एवं राज्य सरकार की भूमिका सशक्त बनी रहती है।
आध्यात्मिकता बनाम व्यावसायिकता	टैगोर की शिक्षा दर्शन में आध्यात्मिक चेतना और मानवता का उच्च स्थान था।	NEP 2020 अधिक व्यावसायिकता (vocational training, employability) और स्किल बेस्ड शिक्षा पर जोर देती है।
नैतिकता बनाम दक्षता	टैगोर शिक्षा को मानवता, करुणा, और नैतिकता के साथ जोड़ते थे।	NEP 2020 यद्यपि मूल्य–आधारित शिक्षा की बात करती है, लेकिन उसका मुख्य उद्देश्य दक्ष और प्रतिस्पर्धी नागरिक बनाना अधिक प्रतीत होता है।
गुरुकुल और शांतिनिकेतन मॉडल की अनुपस्थिति	टैगोर की शिक्षा शांतिनिकेतन गुरुकुल के खुले वातावरण में दी जाती है।	परन्तु NEP 2020 में शांतिनिकेतन जैसी खुली शिक्षा प्रणाली की कोई सीधी झलक नहीं दिखती है।

IV. टैगोर के शैक्षिक विचारों की नई शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता की समीक्षाः

आत्म–विकास बनाम अर्थव्यवस्था

टैगोर के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा का विकास और व्यक्ति का नैतिक–मानवीय उत्थान है, जबकि नई शिक्षा नीति 2020 का केंद्र कौशल, उत्पादकता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर अधिक केंद्रित है। नीति में मानवता और नैतिकता की बात तो की गई है, पर उसका स्पष्ट क्रियान्वयन संदिग्ध है।

शिक्षा और प्रकृति का संबंध

टैगोर शिक्षा को प्रकृति से जोड़ने के पक्षधर थे। उन्होंने खुले वातावरण में, प्राकृतिक संसाधनों के साथ, जीवन के विविध रंगों के माध्यम से सीखने को आवश्यक माना। नई शिक्षा नीति 2020 में इसका उल्लेख सीमित रूप में मिलता है। विद्यालयों की संरचना और पाठ्यचर्या में प्रकृति के साथ एकात्मता की आवश्यकता महसूस की गई है।

मातृभाषा और सांस्कृतिक शिक्षा

टैगोर ने बालक की भाषा और संस्कृति को उसकी शिक्षा का मूल आधार माना। नई शिक्षा नीति 2020 में 8वीं कक्षा तक मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की बात कही गई है, जो टैगोर के दृष्टिकोण से मेल खाती है। हालांकि इसका पूर्ण क्रियान्वयन देश के अनेक क्षेत्रों में अभी भी एक चुनौती है।

कला और संगीत का समावेश

टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण में कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा माना गया है। नई शिक्षा नीति 2020 में 'आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग' की अवधारणा इस दिशा में एक सकारात्मक पहल है। यह स्पष्ट रूप से टैगोर की प्रेरणा से जुड़ा विचार है।

बहु–विषयक शिक्षा और रचनात्मकता का प्रोत्साहन

टैगोर ने एक विषय तक सीमित रहकर ज्ञान अर्जन के स्थान पर बहु–विषयक ज्ञान और संवाद पर बल दिया। नई शिक्षा नीति 2020 ने भी विश्वविद्यालय स्तर पर मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन का मार्ग प्रशस्त किया है। यह टैगोर की शिक्षा दृष्टि की समकालीन पुनर्व्याख्या है।

शिक्षक–छात्र संबंध और स्वतंत्रता

टैगोर गुरु–शिष्य संबंध को प्रेम, विश्वास और संवाद पर आधारित मानते थे। उन्होंने अनुशासन के स्थान पर आत्मनियंत्रण की भावना को अधिक महत्त्व दिया। नई शिक्षा नीति में 'नैतिक नेतृत्व', शिक्षक की 'सतत् व्यावसायिक वृद्धि' आदि बिंदुओं का समावेश इस दिशा में सकारात्मक संकेत है।

V. शिक्षा नीति 2020 को टैगोर के अनुसार प्रभावी बनाने हेतु सुझावः

रवीन्द्रनाथ टैगोर एक युगद्रष्टा शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की एकरसता और यांत्रिकता के विरुद्ध एक मानवीय, कलात्मक और प्रकृति–सापेक्ष शिक्षा प्रणाली की नींव रखी। उनकी शिक्षा–दृष्टि में स्वतंत्रता, रचनात्मकता, सह–अस्तित्व और आत्म–ज्ञान का समावेश था। दूसरी ओर, भारत की नई शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की आवश्यकताओं, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, कौशल–आधारित अर्थव्यवस्था तथा समावेशी विकास को लक्ष्य बनाकर तैयार की गई है।

यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि टैगोर के शैक्षिक विचार और नई शिक्षा नीति 2020 में अनेक बिंदुओं पर साम्यता है, फिर भी व्यवहारिक क्रियान्वयन और वैचारिक गहराई में अभी भी कुछ महत्वपूर्ण अंतराल हैं। इसी संदर्भ में यह खंड शोध की दृष्टि से मुख्य निष्कर्षों और उपयुक्त सुझावों को प्रस्तुत करता है।

नीति में टैगोर की शिक्षा–दृष्टि को स्पष्ट रूप से स्थान दिया जाए–

शिक्षा नीति दस्तावेजों में टैगोर का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है। भारत जैसे देश की शिक्षा नीति में इस महान चिंतक की विचारधारा का औपचारिक समावेश होना चाहिए। टैगोर के उद्धरण, दृष्टिकोण और शिक्षण मॉडल को शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास और शैक्षिक दर्शन के केंद्र में लाना चाहिए।

प्रकृति–आधारित शिक्षा का विस्तार–

टैगोर की शिक्षा व्यवस्था प्राकृतिक परिवेश में अध्ययन की पक्षधर थी। वर्तमान में डिजिटल लर्निंग और स्मार्ट क्लास जैसी व्यवस्थाएँ कृत्रिम वातावरण बना रही हैं। नीति निर्माताओं को चाहिए कि विद्यालयों में 'ग्रीन स्कूलिंग', ओपन एयर क्लासेस, बागवानी, स्थानीय परिवेश के अनुकूल पाठ्यचर्या जैसे विकल्पों को बढ़ावा दें।

कला–आधारित मूल्य शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए–

टैगोर ने शिक्षा को सौंदर्य और संवेदनशीलता से जोड़ने की बात की थी। नई शिक्षा नीति में इस दिशा में पहल की गई है, किंतु इसे केवल ''सह–शैक्षणिक गतिविधि'' न मानकर मुख्यधारा का भाग बनाना आवश्यक है। इसके लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति और समयबद्ध प्रशिक्षण आवश्यक है।

शिक्षक प्रशिक्षण में टैगोर के शैक्षिक विचारों को शामिल किया जाए–

वर्तमान बी.एड. पाठ्यक्रमों में टैगोर का शिक्षादर्शन सीमित रूप में पढ़ाया जाता है। इसे विस्तार देकर व्यवहारिक शिक्षण–अभ्यास से जोड़ना चाहिए ताकि भावी शिक्षक टैगोर की रचनात्मक और समावेशी दृष्टि को आत्मसात कर सकें।

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण को अनिवार्य किया जाए–

नई शिक्षा नीति 2020 की सबसे बड़ी चुनौती इसकी मातृभाषा आधारित शिक्षण प्रणाली का उचित कार्यान्वयन है। इसके लिए राज्यों को अनुवाद, शिक्षक प्रशिक्षण, और स्थानीय पाठ्य–पुस्तकों की व्यवस्था प्राथमिकता से करनी चाहिए।

स्थानीय नवाचार और शिक्षा संस्थानों को प्रयोगशाला बनाना–

टैगोर का विश्वास था कि हर विद्यालय एक प्रयोगशाला हो – जहाँ शिक्षण का तरीका स्थानीय आवश्यकताओं, परिवेश और रचनात्मकता के आधार पर हो। इसलिए, नीति को क्रियान्वित करते समय 'वन–साइज–फिट्स–ऑल' दृष्टिकोण के स्थान पर लचीलापन अपनाना चाहिए।

शांति निकेतन मॉडल का पुनरावलोकन और प्रयोग–

शांति निकेतन एक वैकल्पिक शिक्षा का जीवंत उदाहरण था। आज उसकी पुनर्व्याख्या कर आधुनिक आवश्यकताओं के साथ समायोजन करके इसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। इसका एक 'मॉडल' विकसित कर देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रायोगिक विद्यालय खोले जा सकते हैं।

VI. निष्कर्ष

इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन और भारत की नई शिक्षा नीति 2020 दो भिन्न समयों के विचार हैं, किंतु इन दोनों में सार तत्वों की अद्भुत संगति है। टैगोर की शिक्षा दृष्टि मानवीय चेतना, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और प्रकृति की ओर लौटने की प्रेरणा देती है, जबकि नई शिक्षा नीति 2020 भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने के लिए कौशल, तकनीक और मूल्यपरकता का संयोजन प्रस्तुत करती है। यदि टैगोर के मूल विचारों को आधुनिक संदर्भ में फिर से परिभाषित कर नई शिक्षा नीति 2020 में गहराई से समाविष्ट किया जाए, तो भारतीय शिक्षा व्यवस्था न केवल वैश्विक मानकों पर प्रतिस्पर्धी बन सकती है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी समृद्ध हो सकती है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली को मानवीय, समावेशी और रचनात्मक बनाने की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला हो सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 एक सशक्त प्रयास है, परंतु यदि उसे टैगोर की विचारधारा के अनुरूप ढाला जाए, तो यह भारतीय संस्कृति, समाज और व्यक्ति निर्माण को और अधिक मजबूत बना सकती है।

VII. सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Tagore, R. (1917). Personality. Macmillan.
2. Tagore, R. (1961). Towards Universal Man. Asia Publishing House.
3. Sen, A. (1997). Tagore and His India. The New York Review of Books.
4. Das Gupta, U. (2004). Rabindranath Tagore: A Biography. Oxfort University Press.
5. NCERT (2005) National Curriculum Framework. NCERT Publications.
6. Chakraborty, S. (2015). Tagore's Educational Thoughts and Contemporary Relevance. International Journal of Education and Psychological Research (IJEPR), 4(2), 1-5.
7. Yashpal Committee Report (2009). Learning Without Burden. Ministry of Human Resource Development.
8. Kumar, K. (2007). What is Worth Teaching?. Orient Blackswan.
9. Majumdar, R.C. (2010). *Education in Ancient India*.
10. Ministry of Education (2020). *National Education Policy 2020*.
11. Kasturirangan Committee Report (2019).
12. Dasgupta, Uma. *(2004 first edition) Rabindranath Tagore: A Biography*. ***Oxford University Press***, *New Delhi.*
13. Sen, Amartya. *(2005) The Argumentative Indian. Farrar, Straus & Giroux, New York.*
14. IGNOU Study Material on Educational Philosophy. IGNOU Official SLM, Regular Updates on PDF Blocks eGyankosh – No version/year.
15. *UNESCO Report on Holistic Education (2021).*
16. NCERT. (2017). *Educational Thoughts of Indian Thinkers*.
17. टैगोर, रवीन्द्रनाथ. शिक्षा पर निबंध. ***साधना पत्रिका 1892 और 1917***.